सार्वभौमिक धर्म एवं परमेश्वर

– संकर्षण आचार्य –

हम विश्व के समस्त तत्वों को दो पृथक समूहों में बांट सकते है। पहले समूह में वे तत्व सम्मिलित हैं जिनका मनुष्य को ज्ञान है। इसे हम ज्ञान समूह कहेंगे। दूसरे समूह में सभी अवशिष्ट तत्व हैं। इसे अज्ञात समूह कहा जाएगा। ये दोनों समूह स्थिर नहीं हैं अपितु समय के साथ परिवर्तनशील हैं। ज्ञान का प्रसार होता रहता है। अज्ञात का क्षेत्र, सिद्धांत रूप में, घटता तो है, फिर भी वह अनन्त है।

मनुष्यों ने सार्वभौमिक रूप से विश्व के अज्ञात तत्वों के संबंध में अपनी धारणाएं बना रखी है। उन्होनें अपनी इन धारणाओं को धर्म का नाम दिया है। मेरी परिभाषा में सार्वभौमिक धर्म में 'अज्ञात तत्वों का समूह' ही 'सार्वभौमिक परमेश्वर' है। मैं अज्ञात तत्वों के समूह को इसलिए सार्वभौमिक कहता हूं क्योंकि इनको सभी धर्मों में समान रूप से मान्यता दी गई है।

सार्वभौमिक धर्म में, जो ज्ञान का प्रसार कर रहे हैं वे सब परमेश्वर के पुत्र है। नवज्ञान की खोज अज्ञात तत्वों को प्रकट करने की लालसा के तुल्य है।

वर्तमान धर्मों में परमेश्वर को प्राप्त करने की इच्छा को प्रार्थना कहते है। सार्वभौमिक धर्म में सार्वभौमिक परमेश्वर को प्राप्त करने की अभिलाषा को वैज्ञानिकगण, अनुसंधान, अध्यवसाय और कर्म–निष्ठा कहते है।

वैज्ञानिक प्रभु के सच्चे पुत्र हैं क्योंकि वे अज्ञात अर्थात सार्वभौमिक परमेश्वर के रहस्य को प्रकट करने में निरंतर लगे हुए हैं। तनिक सोचिए कि यह परमेश्वर–पुत्र की धारणा आइंस्टीन, विवेकानन्द, ईसा, मौहम्मद, कृष्ण और महात्मा गांधी पर क्यों समान रूप से लागू होती है। वे सब कुछ अज्ञात तत्वों को खोजकर नवज्ञान की प्राप्ति के प्रयास में लगे थे जो तत्कालीन मनुष्यों की समझ से परे की बात थी। महात्मा गांधी ने पराधीनता से मुक्ति हेतु नई विधि की खोज की थी। स्वाधीनता प्राप्ति के सफल उपाय (सत्याग्रह) की खोज के लिए जनता ने श्रद्धापूर्वक उनका अनुसरण किया। महात्मा गांधी की यह अभिनव विधि इससे पूर्व सर्वथा अज्ञात थी। इसी तर्क के आधार पर आइंस्टीन, ईसा, विवेकानन्द, मौहम्मद और कृष्ण भी परमेश्वर के पुत्र हैं। हिन्दू (भारत के निवासी) कृष्ण को परमेश्वर का अवतार मानते हैं, मध्य पूर्व के देशों में ईसा को प्रभु–पुत्र कहा जाता है, अन्य लोगों ने 'अवतार' या 'पुत्र' को पैगंबर नाम दिया। उन सभी ने अज्ञात अथवा सार्वभौमिक परमेश्वर के कतिपय तत्वों को उजागर करने के लिए उसी (वैज्ञानिक) प्रक्रिया को पूर्णतः स्पष्ट किया है, जो मेरे मतानुसार सार्वभौमिक धर्म है।

अतः ईसाई, यहूदी, मुस्लिम, हिन्दू, बौद्ध, सिख तथा शेष सभी मेरे द्वारा प्रतिपादित सार्वभौमिक परमेश्वर सहित सार्वभौमिक धर्म के सच्चे अनुयायी है।

ध्यातव्य है कि ज्ञान काल सापेक्ष है। समय के साथ–साथ इसका क्रमिक विकास हो रहा है। यह गणित में सिग्मा बीजगणित है और अर्थशास्त्र में सूचना समुच्चय। विज्ञान का प्रत्येक क्षेत्र प्रकृति की अनिश्चित अवस्थाओं के संबंध में कुछ धारणाओं अथवा संभावनाओं के समूह पर आधारित है। इन धारणाओं का उपयोग विज्ञान की विशेष घटनाओं के नियंत्रण एवं निर्णय करने की अपेक्षाकाओं के निर्धारण के लिए किया जाता हैं। वित्तीय अर्थशास्त्र में धारणाओं का उपयोग व्यापार की वस्तुओं और सेवाओं के मूल्य निर्धारण हेतु किया जाता है। धारणाएं धन एवं समृद्धि का आधार हैं। आधुनिक वैज्ञानिक धारणओं का समूह भी सार्वभौमिक धर्म में समाहित हैं। किसी भी आर्थिक परिवर्तनीयता, जैसे कि घरेलू आय, को दो भागों में बांटा जा सकता है, (i) पहला जो कि अर्थशास्त्री की संपूर्ण जानकारी पर निर्भर है और (ii) दूसरा जिसमें शेष सभी बातें हैं, जिसको अस्पष्ट यादृच्छिक परिवर्तनीयता या प्रतिरूप की त्रुटि कहा जाता है। अर्थशास्त्रीगण व्याख्या के अयोग्य यादृच्छिक त्रुटि के लिए कुछ सैद्धांतिक विशेषताओं की कल्पना करते हैं। उनकी यह कल्पना 'धार्मिक' है। यह बात मेरे शोध अध्ययन के समय एक प्रमुख अध्यापक ने स्वीकार की। घरेलू व्यय में आर्थिक परिवर्तनीयता के एक बड़े अंश की व्याख्या के लिए कुछ अर्थशास्त्री अधिक उपयुक्त प्रतिदर्श का उपयोग कर सकते हैं। अधिक अच्छे मॉडल में यादृच्छिक त्रुटि (अव्यारव्येय या अज्ञात अंश) घरेलू आय की व्याख्या की अनिश्चितताओं को कम कर देती है। जनसाधारण अपनी घरेलू आय के यादृच्छिक तत्व को भाग्य कह देते हैं (अच्छा या बुरा) क्योंकि वे इस त्रुटि में यादृच्छिक निर्णय की क्रिया की व्याख्या नहीं कर सकते, जो उन ज्ञात कारकों पर आधारित हो जो आय निर्धारण में सहायक माने जाते है।

सभी नहीं तो अधिसंरव्य व्यक्ति प्रजातांत्रिक शासन की संवैधानिक व्यवस्था के विचार को संजोये रखते हैं, जो मेरे सार्वभौमिक धर्म का मुख्य सिद्धांत है। इस सर्वमान्य विश्वास में दार्शनिकों, पैगंबरों, वैज्ञानिकों और अन्य धर्मोपदेशकों का प्रज्ञान समाहित है। शासन की संवैधानिक व्यवस्था सार्वभौमिक धर्म का मुख्य सिद्धांत है। सार्वभौमिक धर्म का दूसरा मुख्य सिद्धांत संवैधानिक शासन व्यवस्था में समयानुसार संशोधन करते रहना है। सार्वभौमिक धर्म का मार्गदर्शक सिद्धांत यह है कि संविधान में समाज के प्रशासन हेतु मानव का नवीनतम ज्ञान एवं प्रज्ञान प्रतिबिंबित होना चाहिए। मनुष्यों में किसी पंथ, धर्म तथा राष्ट्रीय उद्‌गम के भेदभाव के बिना इस बात पर लगभग सार्वभौमिक सहमति है। ऐसी सार्वभौमिक सहमति अत्यंत प्रज्ञापूर्ण है। सहमति की सार्वभौमिकता सार्वभौमिक धर्म को वैश्विक बनाती है। मानवता की समृद्धि एवं निरंतरता की अभिवृद्धि के लिए पैगंबर मौहम्मद के जिन दो मूलभूत सिद्धांतों ने मानवता के पांचवे भाग को इस्लाम की ओर आकर्षित किया, वे हैं–(i) मानवमात्र की समानता, जिसमें न तो ईसा के परमेश्वर पुत्र का विचार था और न कृष्ण के ईश्वर अवतार का और –(ii) आत्मनिर्भर अर्थनीति जिसमें कोई महाजन धन उधार देने पर सुनिश्चित ब्याज

वसूल नही करता। ऋषि वशिष्ठ ने सर्वप्रथम अतिशय ब्याज दरों के विरूद्ध मत प्रकट किया था। अरस्तू और प्लूटो जैसे दार्शनिकों ने भी ब्याज–दरों के विरूद्ध आवाज उठायी। एक समृद्ध व्यापारी मौहम्मद इस कारण विख्यात हो गए कि उन्होंने उधार धन पर ब्याज नही लिया और मनुष्यों में समानता के सिद्धांत का प्रतिपादन किया। मौहम्मद अपने संदेश के प्रति पूर्णतः आश्वस्त थे। अपने अनुयायियों की विशाल संख्या के कारण उनके मन में सन् 700 में कुरान, सन्नाह और शरीयत में दी गयी अपनी व्यवस्थाओं में संशोधन के महत्व का विचार तक नहीं आया। इस्लाम में इन धर्मग्रंथों के आदेशों के उल्लंघन को ईशनिन्दा माना जाता है और इन कठोर आदेशों का उल्लंघन करने या उन्हें तर्क विरूद्ध कहने वालों के लिए कठोर दंड का प्रावधान है। मैंने कुरान की आयतों से ऐसे उदाहरण लिये हैं जिनमें इस्लाम को स्वीकार न करने वालों के प्रति हिंसा की वकालत की गई है। इस्लाम सभी प्राचीन धर्मों के स्मृतिशेषों एवं संस्कृति का उन्मूलन कर देने का समर्थन करता है।

इस्लाम के दो मूलभूत सिंद्धातों की इनसे तुलना करें, (क) संसार का प्रथम लिखित संविधान (अमरीकी) जिसमें उल्लेख है कि हम सब लोग जन्म से समान हैं और (ख) अमरीकी मौद्रिक व्यवस्था जिसमें शून्य ब्याज दर का विधान है। अमरीकी समाज में धार्मिक आदेशों और फतवाओं की कोई व्यवस्था नहीं है किन्तु उन्होंने इस्लाम के सर्वाधिक महत्वपूर्ण विशेष गुणों को तार्किक रूप से अंगीकार किया है। ये हैं–व्यक्तिगत स्वतंत्रता, स्वाधीनता, अवसरों एवं प्रतिस्पर्द्धा में समानता। इस प्रकार अमरीका इस धरती पर सर्वाधिक इस्लामी राष्ट्र है। अधिकतर 'इस्लामी' देशो, जहां स्वयं को साधारण मुस्लमानों से श्रेष्ठ मानने वाले तानाशाह, बादशाह, मुल्ला शासन करते हैं, वास्तव में इस्लामी नहीं हैं। स्वेच्छाचारी मुस्लिम शासक स्वयं को साधारण मुसलमानों से श्रेष्ठ मानकर इस्लाम के मुख्य सिद्धांत को अपवित्र कर रहे हैं। वे सर्वाधिक इस्लाम विरोधी हैं। अधिसंरव्य मुसलमानों ने तानाशाह शासकों को स्वीकार करके अपने पैगम्बर के संदेशों का अनादर किया है। बहुसंख्य मुस्लिमों का अपने पैगम्बर के प्रति यह घोर अपमानजनक कार्य है एवं स्वहित साधक तानाशाह, बादशाह या मुल्ला अपने महान तथा शक्ति संपन्न होने के बारे में कितना भी आंडबरपूर्ण वक्तव्य देते रहें किंतु अधिकांश इस्लामी राष्ट्र यथार्थ में गैर–इस्लामी हैं।

क्या हम अपने सार्वभौमिक आस्था/धर्म की जनतांत्रिक शासन की संवैधानिक व्यवस्था को अनुल्लंघनीय स्वीकार कर सकते हैं? हमें करना होगा क्योंकि अन्य कोई भी ऐसा सर्वमान्य विश्वास/धर्म नहीं है जो अधिक ग्राह्य हो। मानव समाज के लिए यह सर्वसामान्य विश्वास/धर्म सर्वाधिक अनुकूल है, भले ही आर्दश न हो। इसका खुला अपमान मानव समाज द्वारा निंदनीय, विश्वासघातपूर्ण एवं पवित्रता का अपमान माना जाएगा। मानव समाज को इस अपमान का असंदिग्ध शब्दों में प्रतिवाद करना चाहिए। क्या वे नही करेंगे?

निश्चित रूप से अपने परमात्मा सहित सार्वभौमिक धर्म अभी तो मानव समाज के एक छोटे से भाग का धर्म ही प्रतीत होगा। यथार्थ में अंततः यह सम्पूर्ण मानव समुदाय को समाहित कर लेगा।

यह इसलिए संभव होगा क्योंकि धर्म जैसे मूलभूत विषय के संबंध में निर्णय करना अपने शांतिपूर्ण अस्तित्व एवं समृद्धि के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण है। धर्म सहित कोई भी विश्वास माता–पिता को भी नहीं थोपना चाहिए। आस्था का क्रमिक विकास तो अपने अनुभव और तर्कशीलता से होना चाहिए। अधिसरव्य मनुष्यों के लिए अपने जन्म के उपरांत अपने माता–पिता का धर्म ग्रहण कर लेना अनिवार्य है क्योंकि तब तक वे प्रश्न और तर्क करने में असमर्थ होते हैं।

किसी व्यक्ति द्वारा सार्वभौमिक धर्म को अंगीकार कर लेने का यह अर्थ कदापि नहीं है कि उसकी वर्तमान आस्था स्वतः ही समाप्त हो जाएगी। यह सुखद है क्योंकि कोई व्यक्ति सार्वभौमिक धर्म को थोपा हुआ अनुभव नहीं करेगा जैसे कि उसका वर्तमान बलात स्वीकार कराया गया धर्म। किसी को भी सार्वभौमिक धर्म को चयन करने की पूर्ण स्वतंत्रता है और तर्क संगत एवं बुद्धि संगत बहस के साथ उसके मूलपाठ में परिवर्तन/सुधार की छूट भी है। ऐसी स्वतंत्रता उन देशों के संविधान में समाविष्ट है जो संवैधानिक विधि द्वारा शासित हैं। सार्वभौमिक धर्म का पालन करने वाले व्यक्तियों को संवैधानिक विधि द्वारा संचालित देश के शासन और उनकी अपनी धार्मिक व्यवस्थाओं के मध्य कोई विरोधाभास दृष्टिगत नहीं होगा। सार्वभौमिक धर्म द्वारा ''चर्च और राज्य की पृथकता'' विषय पर पहले ही विचार किया जा चुका है।

सार्वभौमिक धर्म का पालन एवं सार्वभौमिक परमात्मा में विश्वास करना निश्चय ही अत्युत्तम है।

इस प्रचार–लेख का उद्देश्य सार्वभौमिक परमात्मा तथा सार्वभौमिक धर्म के अंग के रूप में मानव समाज की एकजुटता के लिए तर्कसंगत विचारधारा का विकास करना है। ऐसे सामंजस्य का अंतिम लक्ष्य, स्वयं महान एवं शक्तिशाली बनने के लिए समाज का शोषण करने वाले राजनैतिक–धार्मिक नेताओं को प्रभावहीन करके मानवता की स्थिरता एवं समृद्धि को सुनिश्चित करना है।